एकीकृत त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम : भारतीय संगीत (गायन)

स्नातक– तृतीय वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र सैध्दांतिक

सत्र– 2019–20
पूर्णांक– 30
उत्तीर्णांक–11
आंतरिक मूल्यांकन–10

सैध्दांतिक प्रथम प्रश्न पत्र में निर्धारित राग निम्नानुसार रहेंगे–
(रागों के नाम– बहार, मियां मल्हार, अडाणा, दरबारी कान्हडा, भूपाली,, देशकार)

इकाई–1

अ. अंतराल, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, ऑक्टेव।
ब. वाग्गेयकार की परिभाषा– प्रकार एवं लक्षण।

इकाई–2

अ. प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक कालीन श्रुति–स्वर व्यवस्था।
ब. ग्राम– परिभाषा एवं प्रकार।

इकाई–3

अ. मूर्च्छना–परिभाषा एवं प्रकार।
ब. तान–परिभाषा एवं प्रकार।

इकाई–4

अ. कर्नाटक पद्धति के मुख्य सात ताल।
ब. कर्नाटक पद्धति के विभिन्न गीत प्रकार।

इकाई–5

निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन–परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान–

1. पं. भीमसेन जोशी
2. पं. कुमार गंधर्व
3. विदुषी किशोरी अमोनकर
4. विदुषी प्रभा अत्रे

Shoudhury

एकीकृत त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम : भारतीय संगीत (गायन)

स्नातक– तृतीय वर्ष   द्वितीय प्रश्न पत्र सैध्दांतिक   सत्र– 2019–20

पूर्णांक– 30

उत्तीर्णांक–11

आंतरिक मूल्यांकन–10

सैध्दांतिक द्वितीय प्रश्न पत्र में निर्धारित राग निम्नानुसार रहेंगे–
(रागों के नाम– बहार, मियां मल्हार, अडाणा, दरबारी कान्हडा, भूपाली,, देशकार)

इकाई–1

अ. रागों का समय चक्र।

ब. संधिप्रकाश राग एवं परमेल प्रवेशक राग।

इकाई–2

अ. पाठ्यक्रम के रागों का विवरण तथा तुलनात्मक अध्ययन–

1. भूपाली–देशकार
2. बहार–मियांमल्हार
3. अडाणा–दरबारी कान्हडा

ब. पाठ्यक्रम में निर्धारित निम्नलिखित गीतों का स्वरलिपि सहित लेखन–
1. सरगम 2. लक्षणगीत 3. विलंबितख्याल 4. छोटाख्याल 5. धमार ।

इकाई–3

अ. पं. व्यंकटमखी के 72 मेलों की रचना का सिद्धांत।

ब. पं. भातखंडे के 32 थाटों की रचना का सिद्धांत।

इकाई–4

अ. एक सप्तक के आधार पर 484 रागों की रचना का सिद्धांत।

ब. थाट पूर्वी, मारवा, तोडी एवं भैरवी मे प्रांरभिक पांच अलंकारो का लेखन।

इकाई–5

अ. राग–रागिनी वर्गीकरण।

ब. ताल तीव्रा, रूपक, झूमरा, दीपचन्दी का ठाह, दुगुन एवं चौगुन सहित लेखन।

Shoudhary

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2019–2020

कक्षा	–	बी.ए. तृतीय वर्ष
विषय	–	नृत्य–कथक
प्रश्न–पत्र	–	सैद्धांतिक
अधिकतम अंक	–	50

उद्देश्य :– भारतीय नृत्यकला विद्यार्थी को शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्तर पर सशक्त बनाती है, भारत में शास्त्रीय नृत्यों की एक समृद्ध परम्परा और इतिहास है। ये नृत्य हमारी सांस्कृतिक विरासत की मजबूत कड़ी है।

भारतीय कला व संस्कृति से परिचय कराती नृत्यकला का उच्च शिक्षा के अन्तर्गत विषय के रूप में अध्ययन न केवल छात्र को अपनी मजबूत सांस्कृतिक विरासत से परिचित करावेगा, अपितु उसे इस कला के शास्त्र और प्रायोगिक पक्ष में निहित सौदर्न्य को समझने का अवसर भी प्रदान करेगा।

–:इकाई प्रथमः–

- भारतीय नृत्यकला के विकास का संक्षिप्त इतिहास निम्नलिखित काल खण्डों में:–
  1. वैदिक काल
  2. रामायण, महाभारत काल
  3. पूर्व मध्यकाल
  4. मुगलकाल

–:इकाई द्वितीयः–

- आचार्य भरत वर्णित नाट्यशालाऐं:–
- कथक का नृत्तांग
  1. तत्कार
  2. हस्तक
  3. भ्रमरी
  4. ताल प्रबंध

–:इकाई तृतीयः–

- ताल के दश प्राणः–
- ताल शब्दावली :– जरब, कमलय, उठान, फरमाईशी, क़माली, जातीपरन, दुपल्ली, त्रिपल्ली, चौपल्ली
- भातखण्डे ताल पद्धति का सामान्य परिचय

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन
स्नातक कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम
केन्द्रीय अध्ययन मण्डल द्वारा अनुशंसित तथा म.प्र. के राज्यपाल द्वारा अनुमोदित
सत्र 2019-2020

कक्षा	–	बी.ए. तृतीय वर्ष
विषय	–	नृत्य–कथक
प्रश्न–पत्र	–	सैद्धांतिक
अधिकतम अंक	–	50

–:इकाई चतुर्थः–

- राजा चकधर सिंग का नृत्य के विकास में योगदान।
- नृत्य संबंधी निबंध – अधिकतम 250 शब्द।
  1. नृत्य की गुरू–शिष्य परम्परा
  2. शास्त्रीय एवं लोकनृत्य
  3. नृत्य एवं योग
- रासलीला एवं कथक नृत्य

–:इकाई पंचमः–

- ताल एकताल में बोलो को लिपिबद्ध करने का अभ्यास
- जीवन परिचयः–
  1. श्रीमती रोहिणी भाटे
  2. पण्डित दुर्गालाल
  3. पण्डित बिरजू महाराज

पाठ्यक्रम हेतु संदर्भित पुस्तकों की सूचीः–

1. कथक नृत्य शिक्षा भाग–1 डॉ. पुरू दाधीच
2. कथक नृत्य शिक्षा भाग–2 डॉ. पुरू दाधीच
3. कथक दर्पण – तीरथराम आजाद
4. नृत्य निबंध – डॉ. पुरू दाधीच
5. भारत के लोकनृत्य – श्याम परमार
6. कथक अक्षरों की आरसी – डॉ. ज्योती बक्सी

Shoudhary

बी0ए0 तृतीय वर्ष वार्षिक पाठ्यक्रम 2019–20
संगीत (वादन) तबला एवं पखावज
प्रथम प्रश्न पत्र (सैद्धांतिक)

पूर्णांक :– 30

इकाई –1

1 पखावज (मृदंग) का संक्षिप्त इतिहास एवं पुष्कर, पणव एवं पटह वाद्यों के क्रामिक विकास का अध्ययन।

2 भारतीय संगीत के इतिहास के अर्न्तगत आधुनिक काल में संगीत की स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन।

इकाई–2

1 संगीत के विकास में प्रचार प्रसार माध्यमों की भूमिका का विस्तृत अध्ययन।

2 तबले के विभिन्न घरानों (बनारस, अजराड़ा, पंजाब, फरुखावाद) का अध्ययन एवं विभिन्न घरानों की वादन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई–3

1 वाद्य वर्गीकरण के सिद्धान्त (प्राचीन काल से आधुनिक काल) तक के विभिन्न विचारकों के मतो का समीक्षात्मक अध्ययन।

2 पाश्चात्य संगीत के ताल वाद्यों का सामान्य परिचय।

इकाई–4

1 लोक संगीत में प्रयुक्त प्रमुख अवनद वाद्यों का सामान्य परिचय, बनावट एवं वादन शैली का अध्ययन।

2 सुगम संगीत में प्रयुक्त तालों की सामान्य जानकारी।

इकाई– 5

1 संगीत के समसामायिक विषयों पर निबंध लेखन।

Vineet Choudhary

बी0ए0 तृतीय वर्ष वार्षिक पाठ्यक्रम 2019–20
संगीत (वादन) तबला एवं पखावज
द्वितीय प्रश्न पत्र (सैद्धांतिक)

पूर्णांक :– 30

इकाई –1

1 निम्नांकित शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखने का ज्ञान:–
1) नौहवका 2) गत–कायदा 3) रेला 4) उठान 5) वॉट(चलन) 6) पेशकार
7) मुखड़ा–मोहरा 8) त्रिपल्ली–चौपल्ली

इकाई –2

1 तबला वादन में हस्त साधना विधि का अध्ययन।
2 तबला वादन में साथ संगत के सिद्धान्त का विस्तृत अध्ययन(गायन, वादन एवं नृत्य की तबला संगति के संदर्भ में)

इकाई–3

1 निम्नांकित संगीतज्ञों का परिचय एवं सांगीतिक योगदान का अध्ययन।
1) भरत 2) शारंगदेव 3) पं. वाचा मिश्र 4) नाना पानसे 5) उ. काले खॉ
6) उ. अल्लारखा खॉ
2 समान मात्रा के तालों के औचित्य एवं महत्व का अध्ययन।

इकाई–4

1 पाठ्यक्रम की तालों का सम्पूर्ण शास्त्रीय परिचय एवं ठेकों को लिपिबद्ध करने का ज्ञान।
1) रुद्र 2)झूमरा 3) घमार 4) गजझम्पा 5) पंचमसवारी 6) पश्तों
7)पंजाबी
2 पाठ्यक्रम के तालों को ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन की लयकारियों में लिपिबद्ध करने का ज्ञान।

इकाई–5

1 लयकारी के कठिन प्रकारों का सामान्य अध्ययन (आड़, विआड़ कुआड़)
2 तीनताल, झपताल, रुपक तालो में चक्करदार, टुकड़े, परन एवं तिहाइयों को लिपिबद्ध करने का ज्ञान।

4

Vineet Choudhary